07 / 02 / 80 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

"विचित्र राज्य दरबार की अनुभूति"

➢➢ मैं आत्मा स्वयं को बापदादा की संगमयुगी कर्मेन्द्रीय-जीत स्वराज्य अधिकारी, राज्य अधिकारी बच्ची के रूप में देख रही हूँ।

➳ _ ➳ सर्व कर्मेन्द्रियों के कर्म की स्मृति से परे एक ही आत्मिक स्वरूप में स्थित मैं आत्मा अपने राज्य दरबार, राज्य कारोबार को देख रही हूँ।

→ मैं आत्मा कर्म अधिकारी स्टेज की अनुभूति की अनुभूति कर रही हूँ।

→ मैं रूप-बसन्त दोनों का बैलेन्स का रख रही हूँ।

→ बसन्त बन, रूप में स्थित हो - दोनों की समानता को देख रही हूँ।

■ मुझे कर्मातीत अवस्था की खींच की अनुभूति हो रही है।

■ मैं आत्मा प्रकृतिजीत बनती जा रही हूँ।

➳ _ ➳ राज्य दरबार की मुख्य 8 सहयोगी शक्तियाँ मेरी सहयोगी बनती जा रही है।

→ ये अष्ट शक्तियाँ अर्थात अष्ट रतन, अष्ट सहयोगी मेरे राज्य कारोबार की शोभा बढ़ा रही है।

■ मेरी संकल्प शक्ति, निर्णय शक्ति और संस्कार शक्ति - तीनो ही शक्तियाँ महामंत्री की तरह अपना कार्य कर रही है।

➢➢ अब मैं अपने फाइनल रिजल्ट को देखती हूँ।

➳ _ ➳ मैं आत्मा कंट्रोलिंग पावर द्वारा रिफाइन बनती जा रही हूँ।

→ धर्मराज के दरबार मे जाने से मुक्त हो गयी हूँ।

→ पुराने खाते का हिसाब-किताब चुक्तु हो गया है

→ खाता बिलकुल क्लियर हो गया है।

■ संस्कार परिवर्तन हो रहे है।

■ शिव-मंत्र द्वारा पुराने संस्कार भस्म होते जा रहे है।

■ बाप द्वारा मिले सर्व खजाने स्व-कल्याण के साथ विश्व कल्याण के प्रति सार्थक हो रहे है

■ रूहानियत और रहमदिल की वृत्ति धारण होती जा रही है।

➳ _ ➳ विश्व मे सुख और शांति की किरणे फैला रही हूँ।

→ भटकती हुई आत्माओं के लिए लाइट हाउस और माईट हाउस बन भटकती हुई आत्माओ को ठिकाना दे रही हूँ।

■ श्रेष्ठ कर्म करने वाली होली हंस बनती जा रही हूँ।

➢➢ मैं स्वयं को चमकीली फ़रिश्ते ड्रेस में सजे हुए देख रही हूँ।

➳ _ ➳ मैं और मेरा बाबा तीसरा कोई नही।

→ बाप से सर्व प्राप्तियों की अनुभूति कर रही हूँ।

→ सदा खुशी के झूले में झूल रही हूँ।

■ सदा एवरेडी हूँ।

➳ _ ➳ पुरानी दुनिया के आकर्षणों से दूर होती जा रही हूँ।

→ मायाजीत बन गयी हूँ।

→ प्रकृतिजीत बन गयी हूँ।

■ स्व-परिवर्तन द्वारा विश्व परिवर्तन के निमित्त मैं श्रेष्ठ आत्मा बन गयी हूँ।